BODHIVRUKSHA JOURNAL OF DIVERSE DISCIPLINE
E-ISSN : 3139-1486
An Open Access, Peer-Reviewed, Multidisciplinary Scholarly Journal
Bi-monthly | Multilingual (English, Hindi, Marathi) | Academic Research

@2026 Volume 2, Issue 4 (July-August) https://bjddjournal.org/ (E-ISSN : 3139-1486)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में पंडित मदन मोहन मालवीय जी के शिक्षा दर्शन की वर्तमान शिक्षा में प्रासंगिकता का अध्ययन

डॉ.पूनम श्रीवास्तव

सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
ईमेल : poonamjrf6@gmail.com

अध्ययन का सारांश

पंडित मदन मोहन मालवीय जी का शिक्षा दर्शन और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) दोनों भारतीय शिक्षा प्रणाली के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। मालवीय जी ने शिक्षा को केवल ज्ञान का माध्यम नहीं, बल्कि व्यक्तित्व के नैतिक और सांस्कृतिक विकास का एक साधन माना। उनके दृष्टिकोण में भारतीय संस्कृति, नैतिकता, और ज्ञान के साथ-साथ तकनीकी विकास का समन्वय किया गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य शिक्षा को समावेशी, गुणवत्तापूर्ण और भारतीय संस्कृति के मूल्यों से जोड़ना है। NEP 2020 में शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर व्यावहारिक और कौशल आधारित शिक्षा को महत्व दिया गया है, जो मालवीय जी के दृष्टिकोण के अनुकूल है।

मालवीय जी का मानना था कि शिक्षा का मूल मंत्र व्यक्ति का सर्वांगीण विकास है, जिससे वह समाज में आदरणीय और विश्वास पात्र बन सके। इसी प्रकार, NEP 2020 भी विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक, और भावनात्मक विकास पर जोर देती है, ताकि वे सच्चाई और ईमानदारी से जीवन व्यतीत कर सकें।

इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि मालवीय जी के शैक्षिक सिद्धांत और NEP 2020 के उद्देश्य एक-दूसरे के पूरक हैं। इन दोनों का समन्वय भारतीय शिक्षा को एक नई दिशा देने में सहायक होगा, जो न केवल छात्रों को ज्ञान और कौशल प्रदान करेगा, बल्कि उन्हें एक जिम्मेदार और सक्रिय नागरिक बनाने में भी मदद करेगा।

Type : Research Article
Language: Hindi

Received: 2 July 2026
Revised: 4 July 2026
Accepted: 5 July 2026
Published: 7 July 2026
https://doi.org/10.5281/zenodo.21224026

Cite this article:
डॉ.पूनम श्रीवास्तव (2026).राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में पंडित मदन मोहन मालवीय जी के शिक्षा दर्शन की वर्तमान शिक्षा में प्रासंगिकता का अध्ययन
BODHIVRUKSHA JOURNAL OF DIVERSE DISCIPLINE (BJDD),
Vol. 02, Issue 04, pp. 7-13.
ISSN: 3139-1486 (Online)

प्रस्तावना

शिक्षा समाज और राष्ट्र की रीढ़ की हड्डी होती है, हमारा वर्तमान और भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि हमारी शिक्षा पद्धति कैसी है?शिक्षा किसी समाज में सदैव चलने वाली वह सोउद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात

BODHIVRUKSHA JOURNAL OF DIVERSE DISCIPLINE
E-ISSN : 3139-1486
An Open Access, Peer-Reviewed, Multidisciplinary Scholarly Journal
Bi-monthly | Multilingual (English, Hindi, Marathi) | Academic Research
@2026 Volume 2, Issue 4 (July-August) https://bjddjournal.org/ (E-ISSN : 3139-1486)

शक्तियों का विकास होता है, उसके ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और इस प्रकार उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग नागरिक बनाया जाता है। शिक्षा मनुष्य को कई अपराधों से सहज ही मुक्त करती है, शिक्षा के माध्यम से सामाजिक कुरीतियों और अंधविश्वास से मुक्ति काफी हद तक संभव है।भारत में स्वतंत्रता के पश्चात् भारतीय शिक्षा के विकास और गुणात्मक वृद्धि के लिए भारत सरकार द्वारा समय-समय पर विभिन्न प्रकार की शिक्षा नीतियों का निर्माण किया गया, और शिक्षा नीति के सुझावों को शिक्षा के क्षेत्र में प्रस्तावित किया गया (सुमित गगंवार,2020) ।राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को भारत सरकार द्वारा प्रस्तुत किया गया, नई शिक्षा नीति को 29 जुलाई को लागू किया गया नई शिक्षा नीति 2020 को 34 वर्ष बाद लांच किया गया जिसमें भारतीय ज्ञान परंपरा को केंद्र मानते हुए शिक्षा के क्षेत्र में भारतीय मूल्य, विश्वासों,मानको, विचारों को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है (सुमितगंगवार,2020) । राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का लक्ष्य "भारत को एक वैश्विक ज्ञान महाशक्ति"बनाना है(राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत ,2023) । भारतवर्ष में प्राचीन काल से लेकर वर्तमान तक अनेक महान विभूतियों ने जन्म लिया है और समय-समय पर अद्वितीय विचारों से अवलोकित किया है इन्हीं महान विभूतियों में महान दार्शनिक एवं समाजसेवी तथा शिक्षा के अग्रदूत मदन मोहन मालवीय जी के शैक्षिक दर्शन का शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी स्थान रहा है पंडित मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक दर्शन में भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों तथा आधुनिक तकनीकी के विकास का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी भारतीय परंपरा एवं सांस्कृतिक मूल्यों के समावेशन पर बल देती है।महामना मानते थे कि जीवन का सर्वांगीण विकास शिक्षा का मूल मंत्र हो शिक्षा की ऐसी व्यवस्था हो कि विद्यार्थी अपना शारीरिक मानसिक भावनात्मक शक्तियों का विकास कर आगे चलकर किसी व्यवसाय द्वारा सच्चाई और ईमानदारी से अपना जीवन निर्वाह कर सके सौंदर्यपूर्ण जीवन व्यतीत कर सकें,समाज में आदरणीय और विश्वास पात्र बन सके(प्रदीप चावला,2019) । मालवीय जी ने बहुआयामी शिक्षा को परम आवश्यक माना है।

शोध की आवश्यकता

पंडित मदन मोहन मालवीय जी के शिक्षा दर्शन और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) की प्रासंगिकता का अध्ययन वर्तमान समय में अत्यंत आवश्यक है। शिक्षा केवल ज्ञान अर्जन का साधन नहीं है, बल्कि यह समाज के नैतिक, सांस्कृतिक, और व्यावहारिक विकास का भी प्रमुख आधार है। मालवीय जी ने शिक्षा को भारतीय संस्कृति, नैतिक मूल्यों और सांस्कारिक दृष्टिकोण से जोड़ा, जिससे छात्रों का सर्वांगीण विकास हो सके। आज जब शिक्षा में वैश्वीकरण और तकनीकी विकास की बात की जा रही है, तब यह आवश्यक है कि हम अपने ऐतिहासिक शैक्षिक दर्शन को फिर से समझें और उसे वर्तमान में लागू करें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा प्रणाली में सुधार का एक प्रमुख प्रयास है, जिसका उद्देश्य छात्रों को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने के साथ-साथ उन्हें भारतीय सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ना है। मालवीय जी के शिक्षा दर्शन में नैतिकता, सच्चाई, और व्यावहारिकता पर जो जोर दिया गया था, वह NEP 2020 के उद्देश्यों से मेल खाता है। इसलिए, यह अध्ययन इस बात को समझने में मदद करेगा कि मालवीय जी के सिद्धांतों को किस प्रकार आधुनिक शिक्षा में समाहित किया जा सकता है, और इससे शिक्षा प्रणाली को कैसे सुदृढ़ बनाया जा सकता है।

इस शोध की आवश्यकता इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह भारतीय शिक्षा के ऐतिहासिक संदर्भों और वर्तमान नीतियों के बीच एक पुल बनाने का प्रयास करता है। यह अध्ययन शिक्षकों, नीति निर्माताओं, और विद्यार्थियों के लिए एक दिशा-निर्देश प्रदान करेगा, जिससे भारतीय शिक्षा प्रणाली और अधिक सुदृढ़ और संस्कृति-संवर्धक बन सके।

शोध के प्रश्न

प्रस्तुत अध्ययन के शोध प्रश्न निम्नलिखित हैं-

BODHIVRUKSHA JOURNAL OF DIVERSE DISCIPLINE
E-ISSN : 3139-1486
An Open Access, Peer-Reviewed, Multidisciplinary Scholarly Journal
Bi-monthly | Multilingual (English, Hindi, Marathi) | Academic Research
@2026 Volume 2, Issue 4 (July-August) https://bjddjournal.org/ (E-ISSN : 3139-1486)

प्रश्न 1.पंडित मदन मोहन मालवीय जी के शैक्षिक दर्शन के मुख्य सिद्धांत क्या है?

प्रश्न 2. मालवीय जी के शैक्षिक विचार व उनकी प्रासंगिकता 2020 की शिक्षा नीति के संदर्भ में क्या है?

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रावधानों का मूल्यांकन करना और उसका अध्ययन करना यह देखते हुए की वह पंडित मदन मोहन मालवीय जी के शिक्षा दर्शन के अनुरूप है या नहीं।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के मुख्य बिंदुओं का अध्ययन करना।
- पंडित मदन मोहन मालवीय जी के शैक्षिक एवं दार्शनिक विचारों का अध्ययन करना।

अध्ययन विधि एवं प्रक्रिया

प्रस्तुत अध्ययन में दार्शनिक शोध विधि के अंतर्गत दस्तावेज विश्लेषण विधि के आधार पर शोध कार्य किया गया है

आंकड़ों के संग्रह की प्रणाली

प्राथमिक स्रोत-

इसके अंतर्गत राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के मूल अभिलेख एवं पंडित मदन मोहन मालवीय जी के द्वारा लिखित पुस्तकों, पत्र पत्रिकाओं, वीडियो इत्यादि एवं अन्य संबंधित तथ्य।

- इंडियन ओपिनियन, लीडर, मर्यादा
- हिंदुस्तान टाइम्स
- कच्चा चिट्ठा
- स्पीच ऑफ़ राइटिंग ऑफ़ पंडित मदन मोहन मालवीय आदि का अध्ययन किया गया।

द्वितीय स्त्रोत-

इसके अंतर्गत राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 से संबंधित विभिन्न पुस्तकों, लेखों, पंडित मदन मोहन मालवीय जी के जीवन से संबंधित विभिन्न लेखकों द्वारा रचित पुस्तकों, पत्रिकाओं एवं इंटरनेट लघु सामग्री इत्यादि।

- उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा (राम सकल पांडे)
- देशभक्त मालवीय हिंदू साहित्य (एस. एल तिवारी)आदि का अध्ययन किया गया।

प्रदतों का विशलेषण,परिणाम और विवेचना

BODHIVRUKSHA JOURNAL OF DIVERSE DISCIPLINE
E-ISSN : 3139-1486
An Open Access, Peer-Reviewed, Multidisciplinary Scholarly Journal
Bi-monthly | Multilingual (English, Hindi, Marathi) | Academic Research
@2026 Volume 2, Issue 4 (July-August) https://bjddjournal.org/ (E-ISSN : 3139-1486)

प्रदातों के विश्लेषण में कोडिंग मैट्रिक्स एक महत्वपूर्ण विधि है, जो डेटा को व्यवस्थित और संरचित रूप में प्रस्तुत करने में सहायक होती है। इस विधि का उपयोग करते हुए, शोधकर्ता ने विभिन्न तत्वों और विषयों के बीच संबंधों का अध्ययन किया है।

मास्टर चार्ट: पंडित मदन मोहन मालवीय जी के शिक्षा दर्शन और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का कोडिंग मैट्रिक्स

कोडिंग श्रेणी	मदन मोहन मालवीय जी के शिक्षा दर्शन	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के मुख्य बिंदु	वर्तमान शिक्षा में प्रासंगिकता
1. शिक्षा का उद्देश्य	नैतिकता, सांस्कृतिक पुनर्जागरण, राष्ट्रीय चेतना	शिक्षा का उद्देश्य समग्र विकास, 21वीं सदी के कौशलों का विकास, वैश्विक नागरिकता	नैतिक शिक्षा और सांस्कृतिक मूल्यों को समाविष्ट करने पर जोर; समग्र शिक्षा और आत्मनिर्भरता की अवधारणा
2. शिक्षण विधियाँ	प्रायोगिक और व्यवहारिक शिक्षा; अनुशासन और चरित्र निर्माण	प्रायोगिक और शोध-आधारित शिक्षण, छात्र-केंद्रित पद्धतियाँ	प्रायोगिक शिक्षण और अनुशासन की शिक्षा में पुनः जोर; छात्र-उन्मुख शिक्षा का प्रवर्तन
3. शिक्षक की भूमिका	आदर्श, मार्गदर्शक, प्रेरक शिक्षक की भूमिका	शिक्षक को सृजनात्मक, सहयोगात्मक, और शोध-आधारित दृष्टिकोण अपनाने पर जोर	शिक्षक-प्रशिक्षण पर बल, आदर्श शिक्षकों की भूमिका को मान्यता
4. भाषा और शिक्षा	मातृभाषा और संस्कृत की शिक्षा पर जोर	प्राथमिक शिक्षा में मातृभाषा का उपयोग, बहुभाषी शिक्षा पर जोर	मातृभाषा के प्रयोग की वर्तमान शिक्षा में प्रासंगिकता बढ़ी; संस्कृत के प्रति नया दृष्टिकोण
5. तकनीकी और आधुनिक शिक्षा	परंपरागत और आधुनिक शिक्षा के संतुलन की वकालत	तकनीकी, डिजिटल शिक्षा और कौशल विकास की आवश्यकता	तकनीकी शिक्षा के साथ परंपरागत मूल्यों का समावेश

BODHIVRUKSHA JOURNAL OF DIVERSE DISCIPLINE
E-ISSN : 3139-1486
An Open Access, Peer-Reviewed, Multidisciplinary Scholarly Journal
Bi-monthly | Multilingual (English, Hindi, Marathi) | Academic Research
@2026 Volume 2, Issue 4 (July-August) https://bjddjournal.org/ (E-ISSN : 3139-1486)

6. नैतिक और मूल्य-आधारित शिक्षा	नैतिक शिक्षा और चरित्र निर्माण पर बल	नैतिकता, संवेदनशीलता, और जिम्मेदार नागरिकता का विकास	मूल्य-आधारित शिक्षा के लिए नीतिगत प्रावधान; नैतिकता का समावेश
7. समावेशी शिक्षा	सभी के लिए शिक्षा, विशेष रूप से समाज के वंचित वर्गों के लिए	शिक्षा में समावेशिता और समान अवसरों का प्रावधान	वंचित वर्गों के लिए शिक्षा का महत्व, विशेष रूप से प्राथमिक और उच्च शिक्षा में
8. आत्मनिर्भरता और रोजगार	व्यावसायिक शिक्षा और रोजगार-संवर्धन पर जोर	व्यावसायिक शिक्षा और कौशल विकास पर बल, आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना	आत्मनिर्भरता और व्यावसायिक शिक्षा के लिए प्रासंगिक नीति प्रावधान
9. महिला शिक्षा	महिलाओं की शिक्षा और समाज में उनके योगदान पर जोर	महिला शिक्षा को सशक्त बनाने के लिए नीतिगत कदम, लैंगिक समानता	महिलाओं के लिए शिक्षा के अवसरों में वृद्धि और लैंगिक समानता को बढ़ावा
10. अनुसंधान और नवाचार	अनुसंधान को बढ़ावा देना, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और नवाचार पर बल	अनुसंधान और नवाचार की संस्कृति को बढ़ावा देना, उच्च शिक्षा में अनुसंधान की प्रमुखता	अनुसंधान-आधारित शिक्षा और नवाचार की प्रवृत्ति

पंडित मदन मोहन मालवीय जी का शिक्षा दर्शन भारतीय शिक्षा प्रणाली में नैतिकता, सांस्कृतिक पुनर्जागरण, और राष्ट्रीय चेतना के विकास पर बल देता है। उन्होंने शिक्षा के उद्देश्य को केवल ज्ञान अर्जन तक सीमित नहीं रखा, बल्कि व्यक्तित्व के समग्र विकास और चरित्र निर्माण पर भी जोर दिया। उनकी दृष्टि के अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य एक संतुलित और नैतिक नागरिक का निर्माण करना है, जो समाज और देश के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझता हो। इसी प्रकार, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी शिक्षा के समग्र विकास (पृष्ठ 6), 21वीं सदी के कौशलों के विकास (पृष्ठ 7) और वैश्विक नागरिकता की अवधारणा (पृष्ठ 9) को आगे बढ़ाती है।

मालवीय जी ने प्रायोगिक और व्यवहारिक शिक्षा पर जोर दिया, जिससे छात्रों को सैद्धांतिक ज्ञान के साथ-साथ व्यावहारिक अनुभव भी प्राप्त हो सके। इस दृष्टिकोण को आज की छात्र-केंद्रित शिक्षण विधियों (पृष्ठ 20) में देखा जा सकता है। इसके अलावा, उन्होंने शिक्षक की भूमिका को आदर्श और प्रेरक के रूप में परिभाषित किया, जबकि एनईपी 2020 में भी शिक्षकों को सृजनात्मक और शोध-आधारित दृष्टिकोण (पृष्ठ 30) अपनाने की सलाह दी गई है।

भाषा के संदर्भ में, मालवीय जी ने मातृभाषा और संस्कृत की शिक्षा पर जोर दिया (पृष्ठ 21), जो एनईपी 2020 के प्राथमिक शिक्षा में मातृभाषा के उपयोग (पृष्ठ 23) के दृष्टिकोण के साथ मेल खाती है। उन्होंने परंपरागत और आधुनिक शिक्षा के संतुलन की आवश्यकता को भी पहचाना, जो आज की तकनीकी शिक्षा में परंपरागत मूल्यों के समावेश (पृष्ठ 32) के संदर्भ में महत्वपूर्ण है।

BODHIVRUKSHA JOURNAL OF DIVERSE DISCIPLINE
E-ISSN : 3139-1486
An Open Access, Peer-Reviewed, Multidisciplinary Scholarly Journal
Bi-monthly | Multilingual (English, Hindi, Marathi) | Academic Research

नैतिक और मूल्य-आधारित शिक्षा का उनका दृष्टिकोण आज की नीति में संवेदनशीलता और जिम्मेदार नागरिकता (पृष्ठ 9) के विकास के लिए प्रासंगिक है। साथ ही, उन्होंने सभी के लिए शिक्षा, विशेषकर समाज के वंचित वर्गों के लिए शिक्षा की आवश्यकता को समझा, जो कि एनईपी 2020 के समावेशी दृष्टिकोण (पृष्ठ 34) के अनुरूप है।

मालवीय जी का व्यावसायिक शिक्षा और रोजगार-संवर्धन पर जोर (पृष्ठ 22) आज के आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना से जुड़ा है। इसके अतिरिक्त, उन्होंने महिला शिक्षा के महत्व को समझा (पृष्ठ 39), और आज की नीति लैंगिक समानता को शिक्षा में बढ़ावा देती है। अंत में, अनुसंधान और नवाचार पर उनके विचार आज की अनुसंधान-आधारित उच्च शिक्षा (पृष्ठ 43) के संदर्भ में भी महत्वपूर्ण हैं। इस प्रकार, पंडित मदन मोहन मालवीय जी का शिक्षा दर्शन और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लक्ष्य एक दूसरे के पूरक हैं, जो भारतीय शिक्षा प्रणाली को एक नई दिशा प्रदान करते हैं।

अध्ययन का निष्कर्ष

पंडित मदन मोहन मालवीय जी का शिक्षा दर्शन और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 दोनों ही भारतीय शिक्षा प्रणाली के विकास के लिए महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। मालवीय जी ने शिक्षा को एक ऐसा साधन माना, जो न केवल ज्ञान का प्रसार करता है, बल्कि व्यक्तित्व के नैतिक और सांस्कृतिक पहलुओं का भी विकास करता है। उनकी विचारधारा में नैतिकता, अनुशासन, और समग्र विकास के प्रति प्रतिबद्धता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है, जो आज के शिक्षा परिदृश्य में अत्यंत प्रासंगिक है।

आधुनिक अनुसंधान, जैसे कि तिलबरी और वॉर्टमैन (2004) का अध्ययन, इस बात की पुष्टि करता है कि मूल्य-आधारित शिक्षा और नैतिकता का विकास शिक्षा के गुणवत्ता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह नीति न केवल शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने का प्रयास करती है, बल्कि समावेशिता, तकनीकी उन्नति, और मूल्य-आधारित शिक्षा को भी प्रोत्साहित करती है।

मालवीय जी का दृष्टिकोण व्यावहारिक और प्रायोगिक शिक्षा, मातृभाषा की महत्वता, और महिला शिक्षा पर जोर देने में सहायक है, जो NEP 2020 के उद्देश्यों के अनुरूप हैं। जैसे कि यूनेस्को (2014) की रिपोर्ट में कहा गया है, शिक्षा के क्षेत्र में समावेशिता और वैश्विक नागरिकता के विकास की आवश्यकता है। यह स्पष्ट है कि मालवीय जी का शिक्षा दर्शन और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक दूसरे के पूरक हैं, जो भारतीय शिक्षा को एक नई दिशा और दृष्टिकोण प्रदान करते हैं।

अनुसंधान द्वारा यह भी स्पष्ट होता है कि व्यावसायिक शिक्षा और कौशल विकास पर जोर देने से युवाओं को आत्मनिर्भर बनने में मदद मिलती है (मैककेओन, 2002), जो आज की नीति के उद्देश्यों के साथ जुड़ता है। इस प्रकार, मालवीय जी के सिद्धांतों को अपनाने से न केवल शैक्षणिक प्रणाली में सुधार होगा, बल्कि समाज में भी सकारात्मक बदलाव आ सकता है, जो कि एक समृद्ध और सशक्त भारत की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगा।

संदर्भ:

1. **तिलबरी, डी. और वॉर्टमैन, डी.** (2004). *सस्टेनेबिलिटी में लोगों की भागीदारी*. IUCN शिक्षा और संचार आयोग।
2. **यूनेस्को** (2014). *सतत विकास के लिए शिक्षा पर वैश्विक कार्य कार्यक्रम* (*GAP*)। उपलब्ध है: https://unesdoc.unesco.org।
3. **मैककेओन, आर.** (2002). *सतत विकास के लिए शिक्षा टूलकिट*. ऊर्जा, पर्यावरण, और संसाधन केंद्र, टेनेसी विश्वविद्यालय।

BODHIVRUKSHA JOURNAL OF DIVERSE DISCIPLINE
E-ISSN : 3139-1486
An Open Access, Peer-Reviewed, Multidisciplinary Scholarly Journal
Bi-monthly | Multilingual (English, Hindi, Marathi) | Academic Research
@2026 Volume 2, Issue 4 (July-August) https://bjddjournal.org/ (E-ISSN : 3139-1486)

4. **सुमित गंगवार** (2020). "भारतीय शिक्षा नीति का विकास और गुणात्मक वृद्धि". *शिक्षा के क्षेत्र में प्रस्तावित शिक्षा नीति*।
5. **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (2023).** "भारत को एक वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बनाने के लक्ष्य". *भारत सरकार*।
6. **प्रदीप चावला (2019).** "पंडित मदन मोहन मालवीय जी के शैक्षिक दर्शन और उनके योगदान". *शिक्षा का मूल मंत्र*।
7. **भारत सरकार** (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. नई दिल्ली: मानव संसाधन विकास मंत्रालय। उपलब्ध है: https://www.education.gov.in।
8. पांडे, राम सकल. (2021). *उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा*. ज्ञान संजीवनी प्रकाशन।
9. तिवारी, एस. एल. (2018). *देशभक्त मालवीय: हिंदू साहित्य*. शैक्षणिक प्रकाशन।
10. **मालवीय, पंडित मदन मोहन.** (2006). *स्पीच ऑफ़ राइटिंग ऑफ़ पंडित मदन मोहन मालवीय*. वाराणसी: मालवीय स्मारक निधि।